ष्टारमष्टावष्टी। वनस्पतिमृषिः। अग्निं चयाद्म। अश्विना द्वाद्म चयाद्म। सिमधाग्निं बद्रै बद्रै येवैर्श्विना त्विषिमश्विना न भेषजः रूपमश्विना भीमं भामं॥

द्वाद्शाऽन्वाकः।

सिनिडाश्रमिरश्रिना। तृप्ता घमा विराद मृतः। दुहे धेनुः सरस्वती। सामर् श्रुक्रमिहेन्द्रियं। तृन्या भिषजा सृते। श्रुश्रिनाभा सरस्वती। मध्या रजारे-सीन्द्रियं। इन्द्राय पश्रिभिवेहान्। इन्द्रायेन्दुरं सर-स्वती। नराश्रभेन नम्रहः॥१॥

अधातामिश्वना मधु। भेषजं भिषजा सुते। श्रा जुह्वाना सरस्वती। इन्द्रायेन्द्रियाणि वीर्यः। इडाभि रश्विना विषं। समूर्ज्श सश्र्यां देधः। अश्विना नर्मु चेः सुतं। सामर्श्र शुक्रं परिस्तृता। सरस्वती तमाभरत्। बर्हिषेन्द्राय पात्रवे॥ २॥

कवण्या न व्यचस्वतीः। अश्विभ्यां न दुरोदिणः। इन्द्रो न रोद्सी दुर्घ। दुहे कामान्त्सरस्वती। उषा सा नक्तमश्विना। दिवेन्द्रश्रं सायमिन्द्रियेः। सञ्जाना-नेसु पेश्रसा। समञ्जाते सरस्वत्या। पातना अश्विना दिवा। पाहि नक्तश्रं सरस्वति॥३॥